1.

प्रश्न → महाकाव्यत्व की दृष्टि से पृथ्वीराज रासो का मूल्यांकन कीजिए?

उत्तर → 'पृथ्वीराज रासो' हिन्दी साहित्य का प्रथम महाकाव्य माना जाता है। अनेक विवादास्पद मत को छोड़ स्वाभाविक के बाद भी इसका गौरव अक्षुण्ण है महाकाव्य के सभी गुणों से यह ग्रंथ परिपूर्ण है। साहित्यदर्पणकार ने महाकाव्यों के लक्षणों पर प्रकाश डालते हुए लिखा है कि महाकाव्य की कथावस्तु ख्यात अथवा ऐतिहासिक हुआ करती तथा जहाँ कथानक काल्पनिक होते हैं वहाँ भी पात्रों की योजना ऐतिहासिक तथ्य का व्युत्क्रम नहीं करती। खण्ड काव्य में यह व्यतिक्रम हो सकता है पर महाकाव्य में नहीं। महाकाव्य में चरित्र का विकासात्मक स्वरूप उद्घाटित होता है। महाकाव्य के लक्षणों को स्वीकार करते हुए एक लम्बी सूची ही प्रस्तुत की गई है।

"सर्गबद्धो महाकाव्यं तत्रैको नायक सुरः
सद्वंशः क्षत्रियो वादि धीरोदात्तगुणान्वितः।

इसके अतिरिक्त अन्य आवश्यक उपकरणों के संयोजन की बात भी उन्होंने कहा है जिसमें रस अलंकार, वस्तु विन्यास, कथात्मकता का प्रवाह, प्रकृति वर्णन आदि का उल्लेख हुआ है। आचार्य विश्वनाथ का यह लक्षण निरूपण यद्यपि प्राचीन मान्यताओं से युक्त और बाद में महाकाव्यों के लक्षणों में कई परिवर्तन-परिवर्द्धन हुए तथापि पृथ्वीराज रासो को प्राचीन लक्षणों से युक्त करके ही देखने की आवश्यकता है क्योंकि यह हिन्दी साहित्य का प्राचीनतम महाकाव्य है। इसमें इन गुणों की विद्यमानता का भी नागरी प्रचारिणी सभा से प्रकाशित पृथ्वीराज रासो ढाई हजार पृष्ठों का एक ग्रन्थ है जिसकी कथा उनहत्तर सर्गों में विभाजित है। प्रत्येक सर्ग एक दूसरे से कहीं जुड़कर चलते हैं और कहीं अलग-अलग ही पर अलग हैं। ध्यान से पढ़ने पर प्रतीत होता है कि मूल नायक या मूल घटनाओं से बँधा है।

1. पृथ्वीराज रासो में पृथ्वीराज चौहान का चरित्र उनके जीवन सम्बन्धी कई आवश्यक तथ्य, विवाह, जन्म, पराक्रम, शौर्य, वीर्य की घटनाओं का उल्लेख हुआ है। यहाँ नायक धीरोदात्त है। उसमें नायक के धीरोदात्त गुण सबके पाये जाते हैं। नायिका की प्राप्ति के लिए नायक के कई प्रमाण तथा पुरानी मान्यताओं के साथ उपस्थित किया गया है।

२. नायिका के रूप में किसी की प्रधानता और किसी की गौणता कहना उचित नहीं प्रतीत होता। संयोगिता, पद्मावती, इंछिनी आदि इस कोटि में आते हैं। नायिका के चित्रण में नायक के वीर भाव को ही रखा गया है।

3. खलनायक के रूप में शहाबुद्दीन गोरी को रखा है। कथावस्तु के प्रवाह को वीररसात्मक बनाने का सफल प्रयास परिलक्षित है। पृथ्वीराज चौहान का चरित्र प्रदर्शित करना ही इस महाकाव्य की विशेषता है। इसके अन्तर्गत अनेक योद्धे, ऋषि वरांग, सामन्तों की कुलमालाओं का विवरण भी हुआ है।

4. जहाँ ऐतिहासिकता के साथ-साथ कल्पना के तत्वों को भी समाहित किया गया है, वह महाकाव्य का उचित प्रयास है। कल्पना तत्व के आगमन से इस महाकाव्य में और भी गरिमा आ गई है। कहीं-कहीं कल्पना तत्व के आधिक्य के कारण ऐतिहासिक घटनाओं और तिथि क्रम में व्यतिक्रम उपस्थित होता है किन्तु गुणवत्ता का ह्रास नहीं करता। जिन विद्वानों ने इस महाकाव्य के अन्तर्गत ऐतिहासिकता की कसौटी पकड़ी तो इसके प्रामाणिकता और अप्रामाणिकता सम्बन्धी विवाद उठाने में सहयोग किया है। लोकमानस में पृथ्वीराज रासो का महत्व है। इससे इसकी महाकाव्यात्मक गरिमा ही सिद्ध होती है।

पृथ्वीराज रासो की कतिपय महत्वपूर्ण महाकाव्य की विशेषताओं को सांकेतिक अवयवों के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है —

1. कथानक प्रवाह और वस्तु वर्णन की प्रणाली की दृष्टि से इसमें क्षत्रिय वंश की उत्पत्ति के साथ-साथ उनके विभिन्न क्रियाकलाप और विदेशियों से युद्ध का विकासात्मक निरूपण हुआ है। गोरी और अनेक कई युद्ध, पृथ्वीराज की सेनाओं के वर्णन, आपसी संघर्ष तथा अन्यान्य घटनाएँ कथा को सहज प्रवाह में लाते हैं।

2. चरित नायकों की स्थापना में पात्रों के विभिन्न रूपों का निदर्शन भी हुआ है। मुख्य नायक के रूप में पृथ्वीराज चौहान की वीरता सम्पूर्ण महाकाव्य में प्रदर्शित हुई है। इसके विपरीत में गोरी को रख कर चरित नायक का उत्कर्ष प्रदर्शित किया गया है।

3. इस महाकाव्य में इतिहास और कल्पना का सुन्दर वर्णन हुआ है। कतिपय ऐसे स्थल हैं जहाँ इतिहास तो स्पष्ट नहीं होता, पर कु

3

स्थलों पर काल्पनिक विधान की अधिकता के कारण इतिहास का ह्रास हो जाता है। प्रेमाख्यान कथा कल्पित कथा के रूप में विचारणीय है। महाकाव्य उस काल का सजीव चित्र होता है। जिसमें तद-युगीन, राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक प्रवृत्तियाँ निरूपित होती हैं इसके लिए महाकवि कभी-कभी विस्तृत विवरणों का कभी-कभी वर्णनों में कई कोमल स्थल प्रकृति आदि का सहारा लेता है। इस महाकाव्य में युद्धों का सजीव-वर्णन है। अतः महाकाव्य गौरव से युक्त सर्वथा निरूपित है।

5. महाकाव्य में सभी रसों का समावेश होना चाहिए पर प्रधानता किसी एक रस की होनी चाहिए। रसों में सभी रसों को उचित स्थान प्राप्त हुआ है। मुख्य रूप से श्रृंगार और वीर दोनों का नाम आता है। इसमें वीर रस-प्रधान महाकाव्य कहना चाहिए या श्रृंगार रस प्रधान? जब हम तद्युगीन प्रवृत्ति प्रमुख प्रवृत्तियों पर ध्यान दें तो निश्चित करना कठिन हो जाता है कि श्रृंगार है या वीर। इसमें वीर रस के लिए वीर या वीरता के लिए श्रृंगार। इसमें वीर रस की महाकाव्य की संज्ञा दी जाती है। इस दृष्टि से इस की महाकाव्य-रमणीयता अवश्य है।

6. किसी भी महाकाव्य की ~~महत्ता अवश्य निश्चित~~ की कृति है उसमें वर्णित मार्मिक एवं भावुक स्थलों की पहचान उसमें वर्णित मार्मिक स्थलों की पहचान के आधार पर होती है। इस दृष्टि से रत्नों में कई भावुक और मार्मिक ~~दृष्टि~~ से स्थल हैं नायिका के सौन्दर्य निरूपण के अनेक स्थल हैं भावुक वर्णनों पर बल दिया जाता है। सामुद्री भावपूर्ण वर्णनों पर मार्मिकता छायी हुई है। इतिहास में यह मार्मिकता छायी हुई है

तन चितउर मन राजा कीन्हा।
हिय सिंघल बुधि पदमिनि चीन्हा।
गुरु सुआ जेइ पंथ देखावा।
बिनु गुरु जगत को निरगुन पावा॥

इस तरह से वह वरना प्रसंग और विरह आदि प्रसंग में कवि हृदय की भावुकता और मार्मिकता साकार हुई है यह महाकाव्योचित है।

7. इस महाकाव्य में पद्मावती के नख-शिख सौन्दर्य का चित्रण हुआ है। गुरु द्वारा रत्नसेन के सौन्दर्य का उद्घाटित होना दर्शाया गया है वर्णन और प्रेम का उदित होना दर्शाया गया है राजा विजय पाल तथा अलाउद्दीन द्वारा चित्तौड़ वर्णन को देखने की जिज्ञासा है। युद्ध वर्णन की सजीवता महाकाव्य की गरिमा का अत्यन्त परिचायक है। नायक चित्रण में प्रवृत्तियाँ प्रभावित।

संयोगिता, गौरी आदि का चित्रणात्मक कवि ने बड़ी सहजता और रसात्मकता दोनों के उत्कर्षों से संयुक्त कर दिया है।

8. नैतिकता की सार्थकता और उद्देश्य की दृष्टि से भी यह महाकाव्य के मानकों को पूरा करता है। महाकाव्य में प्रयुक्त पात्रों, शब्द और भावाभिव्यक्ति है। इसका प्रमुख उद्देश्य पृथ्वीराज चौहान के प्रताप, पराक्रम और शौर्य को प्रकाशित कर हिन्दू धर्म और संस्कृति की रक्षा का सफल प्रयास।

9. महाकाव्य में अलंकार और छन्दों का वैविध्यपूर्ण निरूपण होता है। वीरगाथा काल से पृथ्वीराज रासो में भी विविधता पायी जाती है। किन्तु मुख्य रूप से कवि ने छप्पय, तोटक और दोहा का प्रयोग किया है जो प्रसंग प्रकृति के अनुकूल है। उपमा अलंकार, अतिशयोक्ति, विभावना काव्य आदि का भी पूरी उपयोग देखने को सर्वत्र दर्शनीय है।

10. रासो की भाषा मूलतः डिंगल है। राजस्थान में प्रचलित डिंगल भाषा का प्रयोग महाकाव्य में किया है किन्तु पृथ्वीराज रासो में डिंगल के आगे पूर्व रीति छन्दों और भाषाओं का प्रयोग भी देखने को मिलता है। चंदबरदाई का ध्यान वर्णन पर चरित्र चित्रण और सामंतीय व्यवस्था के ढंग की चित्रवृत्ति और सज्जा है। भाषा से युक्त यह महाकाव्य भी, अपनी विशेषताएं लक्षित होती हैं।

संक्षेप में हम यह कह सकते हैं कि पृथ्वीराज रासो महाकाव्य के प्राचीन लक्षणों से युक्त एक महाकाव्य है जिसमें तत्कालीन सामाजिक प्रवृत्तियाँ, राजनीतिक गतिविधियाँ, जीवन संगत भावनाओं, विविध रूपों, मान्यताओं, भाषा और छन्दों के विविध रूपों, चरित्र नायक की वास्तविक घटनाओं, अलंकार वैविध्य और वस्तु निरूपण प्रकृति और कल्पना के विचित्र संयोगों का उपस्थापना आदि, रासो की महत्ता का अधिकारी है। यह हिन्दी भाषा का प्रथम महाकाव्य है जिसे अनेक विवादों और प्रमाणिक अप्रमाणिकता के होने का गौरव प्राप्त है।

[illegible]

Scanned with CamScanner